C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी A

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×2=2)(2×3=6)8

हमारे देश को आज़ादी दिलाने के लिये कई स्त्रियों ने कडा संघर्ष किया उनमें सरोजनी नायडू का अपना अलग ही स्थान है। उनकी आवाज बेहद मधुर थी, इसी वजह से वह पूरे विश्व में भारत कोकिला के नाम से विख्यात थी। बचपन में वह बेहद मेधावी छात्रा थी। १९०५ में गोल्डेन थ्रेशोल्ड शीर्षक से उनकी कविताओं का पहला संग्रह प्रकाशित हुआ था। इसके बाद उनके दूसरे और तीसरे कविता संग्रह 'बर्ड आफ टाइम' तथा 'ब्रोकन विंग्स' ने उन्हे सुप्रसिद्ध कवियत्री बना दिया। १९१४ मे इंग्लैंड मे वे पहली बार गाँधी जी से मिली और उनके विचारों से प्रभावित होकर देश के लिये समर्पित हो गई। एक कुशल सेनापति की भाँति उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय आंदोलन, समाज सुधार और कांग्रेस पार्टी के संगठन में दिया। उन्होंने अनेक राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया और कई बार जेल भी गई। पहली महिला राजपाल होने का गौरव प्राप्त हुआ। उन्होंने अपना सारा जीवन देश को समर्पित कर दिया था।

(क) अपनी मधुर आवाज़ के कारण सरोजनी नायडू कौन से नाम से विख्यात थी?

(ख) सरोजनी नायडू को कौन सा गौरव प्राप्त हुआ?

(ग) सरोजनी नायडू ने अपनी प्रतिभा का परिचय कब दिया?

(घ) सरोजनी नायडू ने कौन-कौन से कविता संग्रह ने उन्हें सुप्रसिद्ध कवियत्री बना दिया?

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

वक्त के साथ
सब कुछ बदल जाता है
जगह, चेहरे, सोच
और रिश्ते।
बेमानी हो जाते हैं शब्द,
चक्रव्यूह से घिर जाती हैं
भीष्म प्रतिज्ञाएँ।
वक्त शिल्पी की तरह
दीवारों पर
खुद उकेरता है
इतिहास।
हम सिर्फ़ देखते हैं
दर्शक की तरह।
और रूपांतर करते हैं
अपनी-अपनी भाषाओं में।
रूपांतर - शब्दों के
रूपांतर - प्रतिज्ञाओं के
जगह, चेहरे, सोच
और रिश्तों के।

(i) वक्त के साथ क्या-क्या बदल जाते हैं?

(ii) वक्त को शिल्पी क्यों कहा गया है?

(iii) जो हम देखते हैं, उसे किस प्रकार प्रस्तुत करते हैं?

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।
हो गये एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले-फले।।

1. भाग्य के भरोसे कौन नहीं रहते हैं और क्यों?
2. भीड़ में चंचल बनने का क्या अभिप्राय है?

खंड - ख

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x3=3

(क) मोटरगाड़ी खराब होने से उसे पैदल आना पड़ा। (संयुक्त वाक्य)

(ख) राम ने बूढ़ी महिला को कपड़े दिए। (मिश्र वाक्य)

(ग) जैसे ही गोली चली, पक्षी उड़ गए। (सरल वाक्य)

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांक्ति पदों का परिचय दीजिए : 1x4=4

(क) हम अजमेर घूमने गए।

(ख) दिल्ली भारत की राजधानी है।

(ग) निर्धन मजदूर परिश्रम कर रहा है।

(घ) अरे ! कितना प्यारा बच्चा है।

प्र. 6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x4=4

(क) सरकार बाढ़ पीड़ितों की सहायता करती है। कर्मवाच्य में बदलिए।

(ख) अस्वस्थ होने के कारण वह नहीं दौड़ी। भाववाच्य में बदलिए।

(ग) राधा ने चित्र बनाया। कर्मवाच्य में बदलिए।

(घ) रोहन से टेनिस नहीं खेली जाती है। कर्तृवाच्य में बदलिए।

प्र. 7. निम्नांकित काव्यांशो में प्रयुक्त रस पहचानिए : 1x4=4

(क) चरनकमल बंदों हरिराइ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सबकुछ दरसाइ।।

(ख) निसदिन बरसत नयन हमारे
सदा रहति पावस ऋतु हम पै, जब ते स्याम सिधारे।

(ग) जशोदा हरि पालने झुलावे।

(घ) जथा पंख बिनु खग अति दीना।मनि बिनु फन करिवर कर हीना।
असमय जिवन बंधु बिनु हो ही। जौ जड़ देव जिमावाहि मोहि।।

खंड - ग

प्र. 8. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1+2+2)=5

अकसर कहते हैं - 'क्या करें मियाँ, ई काशी छोड़कर कहाँ जाएँ, गंगा मइया यहाँ, बाबा विश्वनाथ यहाँ, बालाजी का मंदिर यहाँ, यहाँ हमारे खानदान की कई पुश्तों ने शहनाई बजाई है, हमारे नाना तो वहीं बालाजी मंदिर में बड़े प्रतिष्ठित शहनाईवाज रह चुके हैं। अब हम क्या करें, मरते दम तक न शहनाई छूटेगी न काशी। जिस जमीन ने हमें तालीम दी, जहाँ से अदब पाई, वो कहाँ मिलेगी? शहनाई और काशी से बढ़कर कोई जन्नत नहीं इस धरती पर हमारे लिए।'

1. प्रस्तुत पाठ का नाम बताइए।
2. 'क्या करें मियाँ' - प्रस्तुत संवाद का वक्ता कौन है? वे 'गंगा' को किस नाम से संबोधित करते हैं?

3. बिस्मिल्ला खाँ जन्नत किसे कहते हैं? वे मरते दम तक क्या नहीं छोड़ पाएँगे?

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

(क) बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

(ख) 'फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी। आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) पाठ में आए उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जिनसे फ़ादर बुल्के का हिंदी प्रेम प्रकट होता है?

(घ) भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं?

प्र. 10. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)5

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने पर मत रिझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के

(क) माँ ने बेटी को चेहरे पर रीझने के लिए मना क्यों किया है?

(ख) आग रोटियाँ सेंकने के लिए है जलने के लिए नहीं - पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।

(ग) उपर्युक्त पंक्तियों द्वारा कवि ने क्या संदेश दिया है?

प्र. 11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

(क) उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

(ख) 'छाया मत छूना' कविता में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

(ग) माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही थी?

(घ) परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

प्र.12. माता का अँचल शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए। 4

खंड - घ

प्र. 13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : 10

- परीक्षा भवन का दृश्य
- 'नशाखोरी और देश का युवा'

प्र. 14. आपके मोहल्ले में बिजली-आपूर्ति नियमित रुप से नहीं हो रही है बिजली - संस्थानक के अधिकारी को शिकायती पत्र लिखिए। 5

अथवा

आपके जन्म दिवस पर आपके चाचाजी द्वारा उपहार में भेजी गई पढ़ाई से संबंधित संदर्भ पुस्तकें प्राप्त करने पर उन्हें धन्यवाद देते हुए पत्र लिखिए।

प्र. 15. निम्नलिखित विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए : 5

परफ्यूम विज्ञापन तैयार कीजिए।

C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी A

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×2=2)(2×3=6)8

हमारे देश को आज़ादी दिलाने के लिये कई स्त्रियों ने कडा संघर्ष किया उनमें सरोजनी नायडू का अपना अलग ही स्थान है। उनकी आवाज बेहद मधुर थी, इसी वजह से वह पूरे विश्व में भारत कोकिला के नाम से विख्यात थी। बचपन में वह बेहद मेधावी छात्रा थी। १९०५ में गोल्डेन थ्रेशोल्ड शीर्षक से उनकी कविताओं का पहला संग्रह प्रकाशित हुआ था। इसके बाद उनके दूसरे और तीसरे कविता संग्रह 'बर्ड आफ टाइम' तथा 'ब्रोकन विंग्स' ने उन्हे सुप्रसिद्ध कवियत्री बना दिया। १९१४ मे इंग्लैंड मे वे पहली बार गाँधी जी से मिली और उनके विचारों से प्रभावित होकर देश के लिये समर्पित हो गई। एक कुशल सेनापति की भाँति उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय आंदोलन, समाज सुधार और कांग्रेस पार्टी के संगठन में दिया। उन्होंने अनेक राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया और कई बार जेल भी गई। पहली महिला राजपाल होने का गौरव प्राप्त हुआ। उन्होंने अपना सारा जीवन देश को समर्पित कर दिया था।

(क) अपनी मधुर आवाज़ के कारण सरोजनी नायडू कौन से नाम से विख्यात थी?

उत्तर : अपनी मधुर आवाज़ के कारण सरोजनी नायडू भारत कोकिला के से नाम से विख्यात थीं।

(ख) सरोजनी नायडू को कौन सा गौरव प्राप्त हुआ?

उत्तर : सरोजनी नायडू को पहली महिला राजपाल होने का गौरव प्राप्त हुआ।

(ग) सरोजनी नायडू ने अपनी प्रतिभा का परिचय कब दिया?

उत्तर : सरोजनी नायडू ने अपनी प्रतिभा का परिचय आंदोलन, समाजसुधार और कांग्रेस पार्टी के संगठन में दिया।

(घ) सरोजनी नायडू ने कौन-कौन से कविता संग्रह ने उन्हें सुप्रसिद्ध कवियत्री बना दिया?

उत्तर : १९०५ में गोल्डेन थ्रेशोल्ड शीर्षक से उनकी कविताओं का पहला संग्रह प्रकाशित हुआ था। इसके बाद उनके दूसरे और तीसरे कविता संग्रह 'बर्ड आफ टाइम' तथा 'ब्रोकन विंग्स' ने उन्हे सुप्रसिद्ध कवियत्री बना दिया।

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए 'भारत कोकिला' सरोजनी नायडू उचित शीर्षक है।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

वक्त के साथ
सब कुछ बदल जाता है
जगह, चेहरे, सोच
और रिश्ते।
बेमानी हो जाते हैं शब्द,
चक्रव्यूह से घिर जाती हैं
भीष्म प्रतिज्ञाएँ।
वक्त शिल्पी की तरह
दीवारों पर
खुद उकेरता है
इतिहास।
हम सिर्फ़ देखते हैं
दर्शक की तरह।
और रूपांतर करते हैं
अपनी-अपनी भाषाओं में।
रूपांतर - शब्दों के
रूपांतर - प्रतिज्ञाओं के
जगह, चेहरे, सोच
और रिश्तों के।

(i) वक्त के साथ क्या-क्या बदल जाते हैं?
उत्तर : वक्त के साथ वक्त, चेहरे और सोच व रिश्ते बदल जाते हैं।

(ii) वक्त को शिल्पी क्यों कहा गया है?
उत्तर : वक्त को शिल्पी कहा गया है क्योंकि वह इतिहास बनाता है।

(iii) जो हम देखते हैं, उसे किस प्रकार प्रस्तुत करते हैं?

उत्तर : जो हम देखते हैं, उसे उसे दर्शक की तरह प्रस्तुत करते हैं।

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।
हो गये एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले-फले।।

1. भाग्य के भरोसे कौन नहीं रहते हैं और क्यों?

उत्तर : कर्मवीर भाग्य के भरोसे नहीं रहते हैं। वे स्वयं अपने भाग्य विधाता होते हैं क्योंकि वे अपने परिश्रम से भाग्य बदलने की क्षमता रखते हैं। चुनौतियों का डटकर सामना करते हैं और अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करते हैं।

2. भीड़ में चंचल बनने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर : भीड़ में चंचल बनने का अभिप्राय धीरता धारण करने से है। कर्मवीर भीड़ अर्थात् मुसीबत के समय चंचलता नहीं दिखाते हैं बल्कि धैर्य पूर्वक स्थिति का सामना करते हैं। ये कठिन काम को देखकर उकताते नहीं है। अपने साहस, धीरता और परिश्रम के बल पर सफलता प्राप्त करते हैं।

खंड - ख

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1 x 3 = 3

(क) मोटरगाड़ी खराब होने से उसे पैदल आना पड़ा। (संयुक्त वाक्य)

उत्तर : मोटरगाड़ी खराब हो गई इसलिए उसे पैदल आना पड़ा।

(ख) राम ने बूढ़ी महिला को कपड़े दिए। (मिश्र वाक्य)

उत्तर : राम ने उस महिला को कपड़े दिए जो बूढ़ी थी।

(ग) जैसे ही गोली चली, पक्षी उड़ गए। (सरल वाक्य)

उत्तर : गोली चलते ही पक्षी उड़ गए।

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांक्ति पदों का परिचय दीजिए : 1x4=4

(क) हम अजमेर घूमने गए।

उत्तर : हम - सर्वनाम पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एवं स्त्रीलिंग दोनों में संभव, बहुवचन कर्ता।

(ख) दिल्ली भारत की राजधानी है।

उत्तर : भारत - संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन।

(ग) निर्धन मजदूर परिश्रम कर रहा है।

उत्तर : निर्धन - विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, 'मजदूर' विशेष्य।

(घ) अरे ! कितना प्यारा बच्चा है।

उत्तर : अरे ! - विस्मयादि बोधक अव्यय, आश्चर्य का भाव व्यक्त करनेवाला।

प्र. 6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x4=4

(क) सरकार बाढ़ पीड़ितों की सहायता करती है। कर्मवाच्य में बदलिए।

उत्तर : सरकार द्वारा बाढ़ पीड़ितों की सहायता की जाती है।

(ख) अस्वस्थ होने के कारण वह नहीं दौड़ी। भाववाच्य में बदलिए।

उत्तर : अस्वस्थ होने के कारण उससे नहीं दौड़ा गया।

(ग) राधा ने चित्र बनाया। कर्मवाच्य में बदलिए।

उत्तर : राधा द्वारा चित्र बनाया गया।

(घ) रोहन से टेनिस नहीं खेली जाती है। कर्तृवाच्य में बदलिए।

उत्तर : रोहन टेनिस नहीं खेलता है।

प्र. 7. निम्नांकित काव्यांशो में प्रयुक्त रस पहचानिए : 1x4=4

(क) चरनकमल बंदों हरिराइ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सबकुछ दरसाइ।।
उत्तर : शांत रस

(ख) निसदिन बरसत नयन हमारे
सदा रहति पावस ऋतु हम पै, जब ते स्याम सिधारे।
उत्तर : वियोग श्रृंगार रस

(ग) जशोदा हरि पालने झुलावे।
उत्तर : वात्सल्य रस

(घ) जथा पंख बिनु खग अति दीना।मनि बिनु फन करिवर कर हीना।
असमय जिवन बंधु बिनु हो ही। जौ जड़ देव जिमावाहि मोहि।।
उत्तर : करुण रस

खंड - ग

प्र. 8. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1+2+2)=5

अकसर कहते हैं - 'क्या करें मियाँ, ई काशी छोड़कर कहाँ जाएँ, गंगा मइया यहाँ, बाबा विश्वनाथ यहाँ, बालाजी का मंदिर यहाँ, यहाँ हमारे खानदान की कई पुश्तों ने शहनाई बजाई है, हमारे नाना तो वहीं बालाजी मंदिर में बड़े प्रतिष्ठित शहनाईवाज रह चुके हैं। अब हम क्या करें, मरते दम तक न शहनाई छूटेगी न काशी। जिस जमीन ने हमें तालीम दी, जहाँ से अदब पाई, वो कहाँ मिलेगी? शहनाई और काशी से बढ़कर कोई जन्नत नहीं इस धरती पर हमारे लिए।'

1. प्रस्तुत पाठ का नाम बताइए।
   उत्तर : प्रस्तुत पाठ का नाम 'नौबतखाने में इबादत' है।

2. 'क्या करें मियाँ' - प्रस्तुत संवाद का वक्ता कौन है? वे 'गंगा' को किस नाम से संबोधित करते हैं?
   उत्तर : प्रस्तुत संवाद के वक्ता बिस्मिल्ला खाँ है, वे 'गंगा' को मइया नाम से संबोधित करते हैं।

3. बिस्मिल्ला खाँ जन्नत किसे कहते हैं? वे मरते दम तक क्या नहीं छोड़ पाएँगे?
   उत्तर : बिस्मिल्ला खाँ जन्नत काशी को कहते हैं। वे मरते दम तक शहनाई एवं काशी को नहीं छोड़ पाएँगे।

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

(क) बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर : हम लेखक यशपाल के विचारों से पूरी तरह सहमत हैं। किसी भी कहानी की रचना उसके आवश्यक तत्वों - कथावस्तु, घटना, पात्र आदि के बिना संभव नहीं होती। घटना तथा कथावस्तु कहानी को आगे बढ़ाते हैं, पात्रों द्वारा संवाद कहे जाते हैं। कहानी में कोई न कोई विचार, बात या उद्देश्य भी अवश्य होना चाहिए। ये कहानी के लिए आवश्यक तत्व हैं।

(ख) 'फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी। आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : यहाँ बिस्मिल्ला खाँ ने सुर तथा कपड़े (धन-दौलत) से तुलना करते हुए सुर को अधिक मूल्यवान बताया है। क्योंकि कपड़ा यदि एक बार फट जाए तो दुबारा सिल देने से ठीक हो सकता है। परन्तु किसी का फटा हुआ सुर कभी ठीक नहीं हो सकता है। और उनकी पहचान सुरों से ही थी इसलिए वह यह प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उन्हें अच्छा कपड़ा अर्थात् धन-दौलत दें या न दें लेकिन अच्छा सुर अवश्य दें।

(ग) पाठ में आए उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जिनसे फ़ादर बुल्के का हिंदी प्रेम प्रकट होता है?

उत्तर : फ़ादर बुल्के के हिन्दी-प्रेम का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उन्होंने सबसे प्रमाणिक अंग्रेजी-हिन्दी कोश तैयार किया। भारत आकर उन्होंने कलकत्ता से हिंदी में बी.ए. तथा इलाहाबाद से एम.ए. किया। उन्होंने "रामकथा: उत्पत्ति और विकास।" पर शोध कर पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त की। ब्लूबर्ड का अनुवाद 'नील पंछी' के नाम से तथा बाइबिल का हिंदी अनुवाद किया। सेंट जेवियर्स कॉलेज राँची में हिन्दी

विभाग के अध्यक्ष बने। वे 'परिमल' नामक संस्था के साथ भी जुड़े रहे हिंदी को राष्ट्रभाषा के रुप में प्रतिष्ठित करने के लिए उन्होंने अनेक प्रयास किए तथा लोगों को हिंदी भाषा के महत्त्व को समझाने के लिए विभिन्न तर्क दिए।

(घ) भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं?

उत्तर : बेटे की मृत्यु पर भगत ने पुत्र के शरीर को एक चटाई पर लिटा दिया, उसे सफेद चादर से ढक दिया तथा वे कबीर के भक्ति गीत गाकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करने लगे। उनके अनुसार आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहनि अपने प्रेमी से जा मिली। उन दोनों के मिलन से बड़ा आनंद और कुछ नहीं हो सकता। इस प्रकार भगत ने शरीर की नश्वरता और आत्मा की अमरता का भाव व्यक्त किया।

प्र. 10. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)5

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने पर मत रिझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के

(क) माँ ने बेटी को चेहरे पर रीझने के लिए मना क्यों किया है?

उत्तर : जीवन में सुंदरता ही सब-कुछ नहीं होती। वैसे भी जीवन की वास्तविक सच्चाई बड़ी कटु होती है और माँ नहीं चाहती कि उसकी बेटी इस सुंदरता के मोहजाल में फंसें और अन्याय को बर्दाश्त कर
लें।

(ख) आग रोटियाँ सेंकने के लिए है जलने के लिए नहीं - पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।

उत्तर : रोटियाँ सेंकने के लिए है जलने के लिए नहीं पंक्ति का आशय अत्याचार को न सहने से हैं। यहाँ पर माँ अपनी बेटी को समाज में व्याप्त दहेज-प्रथा जैसी कुरीतियों से अपनी बेटी को सचेत और सावधान करना चाहती है।

(ग) उपर्युक्त पंक्तियों द्वारा कवि ने क्या संदेश दिया है?

उत्तर : उपर्युक्त पंक्तियों द्वारा कवि ने शारीरिक सौंदर्य के बजाय आंतरिक गुणों के महत्त्व का संदेश दिया है।

प्र. 11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

(क) उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

उत्तर : गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित उदाहरणों से की हैं

1) गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते से की हैं जो नदी के जल में रहते हुए भी जल की ऊपरी सतह पर ही रहता है। अर्थात् जल में रहते हुए भी जल का प्रभाव उस पर नहीं पड़ता। उसी प्रकार श्रीकृष्ण का सानिध्य पाकर भी उनका प्रभाव उद्धव पर नहीं पड़ा।
2) उद्धव जल के मध्य रखे तेल के गागर (मटके) की भाँति हैं, जिस पर जल की एक बूँद भी टिक नहीं पाती। इसलिए उद्धव श्रीकृष्ण के समीप रहते हुए भी उनके रूप के आकर्षण तथा प्रेम-बंधन से सर्वथा मुक्त हैं।
3) उद्धव ने गोपियों को जो योग का उपदेश दिया था, उसके बारे में उनका यह कहना है कि यह योग सुनते ही कड़वी ककड़ी के सामान प्रतीत होता है। इसे निगला नहीं जा सकता। यह अत्यंत अरूचिकर है।

(ख) 'छाया मत छूना' कविता में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'छाया मत छूना' कविता में कवि ने मानव की कामनाओं-लालसाओं के पीछे भागने की प्रवृत्ति को दुखदायी माना है क्योंकिं इसमें अतृप्ति के सिवाय कुछ नहीं मिलता। हम विगत स्मृतियों के सहारे नहीं जी सकते, हमें वर्तमान में जीना है। उन्हें छूकर याद करने से मन में दुख बढ़ जाता है। दुविधाग्रस्त मन:स्थिति व समयानुकूल आचरण न करने से भी जीवन में दुख आ सकता है। व्यक्ति प्रभुता या बड़प्पन में उलझकर स्वयं को दुखी करता है।

(ग) माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही थी?

उत्तर : माँ और बेटी का सम्बन्ध मित्रतापूर्ण होता है। माँ बेटी के सर्वाधिक निकट रहने वाली और उसके सुख-दुख की साथिन होती है। कन्यादान करते समय इस गहरे लगाव को वह महसूस कर रही है कि उसके जाने के बाद वह बिल्कुल खाली हो जाएगी। वह बचपन से अपनी पुत्री को सँभालकर उसका पालन-पोषण एक संचित पूँजी की तरह करती है। जब इस पूँजी अर्थात् बेटी का कन्यादान करेगी तो उसके पास कुछ नहीं बचेगा। इसलिए माँ को अपनी बेटी अंतिम पूँजी लगती है।

(घ) परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : राम स्वभाव से कोमल और विनयी हैं। परशुराम जी क्रोधी स्वभाव के थे। परशुराम के क्रोध करने पर श्री राम ने धीरज से काम लिया। उन्होंने स्वयं को उनका दास कहकर परशुराम के क्रोध को शांत करने का प्रयास किया एवं उनसे अपने लिए आज्ञा करने का निवेदन किया।

लक्ष्मण राम से एकदम विपरीत हैं। लक्ष्मण क्रोधी स्वभाव के हैं। उनकी जबानछुरी से भी अधिक तेज़ हैं। लक्ष्मण परशुराम जी के साथ व्यंग्यपूर्ण वचनों का सहारा लेकर अपनी बात को उनके समक्ष प्रस्तुत करते हैं। तनिक भी इस बात की परवाह किए बिना कि परशुराम कहीं और क्रोधित न हो जाएँ। राम अगर छाया हैं। तो लक्ष्मण धूप हैं। राम विनम्र, मृदुभाषी, धैर्यवान, व बुद्धिमान व्यक्ति हैं वहीं दूसरी ओर लक्ष्मण निडर, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव के हैं।

प्र.12. माता का अँचल शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए। 4

उत्तर : लेखक ने इस कहानी के आरम्भ में दिखाया है कि भोलानाथ का ज्यादा से ज्यादा समय पिता के साथ बीतता है। कहानी का शीर्षक पहले तो पाठक को कुछ अटपटा-सा लगता है पर जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है बात समझ में आने लगती है। इस कहानी में माँ के आँचल की सार्थकता को समझाने का प्रयास किया गया है। भोलानाथ को माता व पिता दोनों से बहुत प्रेम मिला है। उसका दिन पिता की छत्रछाया में ही शुरू होता है। पिता उसकी हर क्रीड़ा में सदैव साथ रहते हैं, विपदा होने पर उसकी रक्षा करते हैं। परन्तु जब वह साँप से डरकर माता की गोद में आता है और माता की जो प्रतिक्रिया होती है, वैसी प्रतिक्रिया या उतनी तड़प एक पिता में नहीं हो सकती। माता उसके भय से भयभीत है, उसके दु:ख से दुखी है, उसके आँसु से खिन्न है। वह अपने पुत्र की पीड़ा को देखकर अपनी सुधबुध खो देती है। वह बस इसी प्रयास में है कि वह अपने पुत्र की पीड़ा को समाप्त कर सके। माँ का यही प्रयास उसके बच्चे को आत्मीय सुख व प्रेम का अनुभव कराता है। उसके बाद तो बात शीशे की तरह साफ़ हो जाती है कि पाठ का शीर्षक 'माता का आँचल' क्यों उचित है। पूरे पाठ में माँ की ममता ही प्रधान दिखती है, इसलिए कहा जा सकता है कि पाठ का शीर्षक

सर्वथा उचित है। इसका अन्य शीर्षक हो सकता है -- 'माँ की ममता'।

खंड - घ

प्र. 13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : 10

परीक्षा भवन का दृश्य

प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में परीक्षाओं से गुजरना पड़ता ही है। आप किसी भी प्रकार की परीक्षा क्यों न दे रहे हो भय, जिज्ञासा, तनाव आदि से आप घिरे रहते ही हो। ऐसा ही मूल-जुला वातावरण आप हर-एक परीक्षा केंद्र में देख सकते हैं।

विद्यार्थी निर्धारित समय से एक घंटा पहले ही परीक्षा भवन पहुँचने लगते हैं एक के बाद एक वाहन जैसे रिक्शा, ताँगा, कार, स्कूटी, मोटर साईकिल, सायकिलें आदि परीक्षा भवन के सामने रुकती हैं। जो नजदीक रहते हैं वे भी पैदल ही परीक्षा भवन निर्धारित समय से पहले ही पहुँच जाते हैं। परीक्षा भवन के प्रागंण में विद्यार्थी अलग-अलग समूहों में यहाँ-वहाँ खड़े रहते हैं। वे एक-दूसरे से परीक्षा और प्रश्नपत्र के बारे में बातें करते हुए अनुमान लगाने की कोशिश करते हैं कि प्रश्नपत्र में क्या पूछा जाएगा। आपसी बातचीत में कोई एकदम गंभीर और उदास हो उठता है, क्योंकि उसने किसी संभाव्य प्रश्न को अच्छी तरह तैयार नहीं किया था। परीक्षा भवन के बाहर खड़े सभी विद्यार्थियों के चेहरे से बड़ी उत्सुकता झलकती है। कुछ के चेहरे पर भय के भाव भी देखे जा सकते हैं। सभी के मन में भावी प्रश्नपत्र की उत्कंठा रहती है। वे आपस में प्रश्नपत्र और उसी विषय के बारे में बातें करते है। जिन विद्यार्थियों की तैयारी अधिक अच्छी नहीं होती उनके मुखमंडल पर चिंता की रेखाएँ स्पष्ट देखी जा सकती हैं। परीक्षा भवन के बाहर लगे सूचना पट्ट पर सभी विद्यार्थियों का ध्यान रहता है। यहीं से पता चलता है कि किसकी सीट किस हॉल में है। कुछ विद्यार्थियों के माता-पिता या रिश्तेदार उनका हौसला बढ़ाते भी दिखाई पड़ते हैं और प्रश्नों को हल करने के लिए सुझाव देते है। वे उन्हें परीक्षा के भय से मुक्त करने का प्रयास करते रहते हैं। उनके साथ बैठकर

पुनरावर्तन करते हैं कुछ विद्यार्थी परीक्षा उपयोगी साथ लाई गई सामग्री की पुन:पुन: जाँच करते हैं कि सब-कुछ ठीक है या नहीं। कुछ विद्यार्थी तो सारी सामग्री होते हुए भी ऐसे देखते रहते हैं जैसे उनके पास कुछ भी नहीं है।

अंत में विद्यार्थी साथ लाई हुई किताबें, कॉपियों को कमरे के बाहर रखकर परीक्षा के कमरे में चले जाते हैं। कमरे में जाकर अपने नियत स्थान पर बैठकर ईश्वर का नाम स्मरण करते हुए बड़ी बेसब्री से आने वाले प्रश्नप्रत्र की प्रतीक्षा करते हैं।

'नशाखोरी और देश का युवा'

आज पूरी दुनिया नशे की बीमारी से आक्रांत है। हमारा देश भारत भी इससे अछूता नहीं है। नशे के बढ़ते रोग ने समाज और देश के सामने अनेक समस्याएँ खड़ी कर दी हैं। युवाओं को अपनी गिरफ्त में लेने वाली यह बुराई उस दीमक के समान है, जो एक बार लगने पर व्यक्ति को खोखला करके ही दम लेती है।

आज के इस बदलते दौर में पिछले कुछ वर्षों से नशीले पदार्थों का सेवन करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। विशेष कर स्कूलों, कॉलेजों तथा उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों में। आज तमाम छात्र हर फिक्र को धुएँ में उड़ाते हुए देखे जा सकते हैं। नशाखोरी की बीमारी नौजवानों को सही दिशा और लक्ष्य से भटका रही है। जो देश और समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय है। बच्चे जितने शिक्षित, संस्कारी व चरित्रवान होते हैं, समाज और राष्ट्र का भी उतना ही चारित्रिक विकास होता है। भारत में किसी अन्य राष्ट्र की तुलना में ज्यादा युवा धन है।

महात्मा गाँधी ने कहा था - 'अगर मेरे हाथ में एक दिन के लिए भी सत्ता आ जाए तो मैं सबसे पहला काम यह करुँगा कि शराब की तमाम दुकानों को बिना कोई मुआवजा दिए बंद करवा दूँगा।

शराब और नशाखोरी एक गंभीर चिंता का विषय है। नशाखोरी की बीमारी नौजवानों को सही दिशा और लक्ष्य से भटका रही है। समाज के सामने देश के भावी कर्णधारों को इस दुर्व्यसन से बचाना एक बड़ी चुनौती है।

सरकार को नशीले पदार्थों के निर्माण पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाये जाने के बारे में गंभीरता से विचार करना चाहिए। इसके अलावा नशाखोरी के खिलाफ व्यापक जागरूकता अभियान चलाए जाने की भी जरूरत है। इस बुराई को रोकने और खत्म करने के ठोस उपाय के लिए सब की भागीदारी आवश्यक है।

प्र. 14. आपके मोहल्ले में बिजली-आपूर्ति नियमित रुप से नहीं हो रही है बिजली - संस्थानक के अधिकारी को शिकायती पत्र लिखिए। 5

सेवा में
मुख्य अधिकारी
बिजली संस्थान
दिल्ली।
दिनाँक : 5 मई, 2016

विषय : बिजली - आपूर्ति नियमित करवाने हेतु आवेदन पत्र।
महोदय
सविनय निवेदन है कि मैं सीता नगर का निवासी हूँ। मेरी कॉलोनी में चार दिनों से बिजली की आपूर्ति ठीक से नहीं हो रही है। दिनभर में केवल एक-दो घंटे ही बिजली आती है। इस कारण हम नगरवासियों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। गर्मियों के दिन होने के कारण सभी नगरवासी त्रस्त हो रहे हैं।
बिजली व्यवस्था एक आवश्यक सेवा है। आशा है कि आप इस समस्या पर गौर करेंगे और शीध्र ही आवश्यक कार्यवाही द्वारा कॉलोनी में नियमित, बिजली पूर्ति की व्यवस्था करवाओंगे।
धन्यवाद
भवदीय
प्रवीण पांडे

अथवा

आपके जन्म दिवस पर आपके चाचाजी द्वारा उपहार में भेजी गई पढ़ाई से संबंधित संदर्भ पुस्तकें प्राप्त करने पर उन्हें धन्यवाद देते हुए पत्र लिखिए।

नेहरू छात्रावास
दिल्ली पब्लिक स्कूल
नई दिल्ली
दिनाँक - 30 मार्च 2015
आदरणीय चाचाजी
सादर चरण स्पर्श।
पत्र देर से लिखने के लिए क्षमा चाहता हूँ। आप तो जानते ही हो कि मेरी वार्षिक परीक्षा चल रही थी। जिसके कारण मैं आपको पत्र नहीं लिख पाया। यह पत्र मैंने आपको धन्यवाद देने के लिए लिखा है। चाचाजी आपने उपहारस्वरूप जो संदर्भ पुस्तकें भेजी थी उसके लिए अनेकों धन्यवाद। उन पुस्तकों के कारण मुझे अपनी वार्षिक परीक्षा में काफी मदद मिली। आपने अपने व्यस्तम जीवनशैली में भी मेरा जन्मदिन न केवल याद रखा बल्कि उपहार स्वरुप अमूल्य भेंट भेजीं। सच में चाचाजी बहुत-बहुत धन्यवाद। चाचाजी को मेरा प्रणाम और नन्हीं स्नेह को ढेर सारा प्यार देना। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।
आपका पुत्रवत
सौरभ

प्र. 15. निम्नलिखित विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए : 5

परफ्यूम विज्ञापन तैयार कीजिए।

तराना परफ्यूम

दिन भर महकते रहने का अरमान,
अब पूरा होगा तराना परफ्यूमस के साथ।